Written by कुमार सौवीर
Monday, 08 January 2018 23:42

: □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□ : □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ : □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□-□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□ : यह छोटी सी घटना थी□ इतनी छोटी, कि उस पर सामान्□य तौर पर कोई ध्यान भी नहीं दे पाते□ लेकिन पुलिस ने अपनी वर्दी पर बेल्ट कसने के बजा□ अपने दिल को खोल दिया□ फिर क्या था(□क अजस्र धारा बह निकली पड़ी□ करुणा की, जिसमें घुला-मिला मौजूद थी समझदारी, मानवता और सामाजिक रिश्तों का गजब मिश्रित ताना-बाना□

जरा सोचा□ कि □क मासूम बच्चा अपनी आंखों में आंसू भरे हु□ पुलिस थाने पर पहुंचे और बिलख पड़े□ अपने पिता पर शिकायत करें कि उसके पिता उसे समय ही नहीं देते□ वह घूमना चाहता है, लेकिन इसे घुमाने नहीं ले जाते□ वह चाहता है कि उसके पिता उसे नुमाइश या किसी प्रदर्शनी-□ग्जीबिशन में ले चलें□ खुद न भी चल सकें, तो कम से कम ऐसा जरूर करें कि उसे □ग्जीबिशन जाने का अवसर मिल सके□ मगर उसके पिता ऐसा नहीं कर रहे हैं□ बच्चे को इसी बात पर गुस्सा है और वह चाहता है कि पुलिस वाले उसकी मदद करें□ पुलिस वाले उसके बाप पर दबाव डालें ताकि वे उसे □ग्जीबिशन ले जा□ और अगर ऐसा नहीं होता है तो उस बाप के साथ ठीक वही सुलूक किया जा□ थाने में आने वाले सामान्□य शातिर अपराधियों के साथ होता है□ मतलब उन्हें हूर दिया जा□, पीटा जा□ और फिर हवालात में बंद कर दिया जा□□

□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ : □□ □□□□□□

थाने में जब यह बच्□चा पहुंचा तो उसे किसी भी पुलिस वाले ने उसे डांटा नहीं□ न ही उसकी ओर हिकारत-उपेक्षा की नजर डाली□ ऐसा भी नहीं किया उस बच्□चे की बात को अनमने तरीके से ही सुन लिया और उसे टरका लिया□ यह भी नहीं कि उस बच्□चे की बात को सुन कर इंस्□पेक्□टर ने दो-□क पुलिसवालों को भेज कर उसके मोहल्□ले पर पहुंच कर उसके मां-बाप पर अपने पुलिसिया रंग-दाब का प्रदर्शन किया, दो-चार डंडे मारे, या उसके गालियां देते हु□ ताईद करने की कोशिश की कि आइंदा ऐसा हुआ तो डंडा यथास्□थान रख दिया जा□गा□

Written by कुमार सौवीर
Monday, 08 January 2018 23:42

बल्कि पुलिसवालों ने उसकी पीड़ा को सिर्फ समझा ही नहीं, बल्कि उसे व्यापक परिदृश्य में देखने, दिखाने और समझ कर उसका सामूहिक निदान खोजने की कोशिश की। इस पुलिसवाले ने इस बच्चे की पूरी बातचीत का वीडियो बनाया और उस बात को अपने अधिकारियों के साथ ही साथ जन-सामान्य तक वायरल कर दिया। जाहिर है कि यह पुलिसवाला जानता था कि यह सामाजिक मसला है, इसलिये वह यही चाहता रहता होगा कि उसका सामाजिक निदान खोजे।

इस मसले पर वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने भी ठीक उसी गम्भीरता से उसे देखा, समझा और उस मसले का समाधान खोजने का रास्ता निकाल लिया। इटावा का बड़ा दारोगा यानी एस एसपी वैभव कृष्ण ने इस प्रकरण पर संवेदनशीलता का प्रदर्शन किया, और अपने मातहतों से कहा कि इस बच्चे की ख्वाहिश पूरी हो जाए। पुलिसवालों की टोली बच्चे के घर गयी, उसके मां-बाप से बातचीत की, दोनों के साथ ही बच्चे को भी भरसक समझाया। और उसके बाद केवल उस बच्चे ही नहीं, बल्कि पूरे मोहल्ले के ऐसे ही हमउम्र बच्चों को जुटाया। इसके बाद एक बस जुटायी, और उन करीब पचास बच्चों को लेकर यह पुलिसवाले सीधे उस प्रदर्शनी स्थल पहुंचे। बच्चों को घुमाया, बच्चों ने जो भी चाहा, उन्हें खिलाया। झूला झुलाया, अपने साथ सैर की और उनकी हर एक बात को पूरी बात सुनी। **(□□□□□:)**

□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□,□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□,□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□-□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□:-

[□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□](#)